1.. श्रृंगार रस - जब किसी सहृदय के हृदय में रति नामक स्थायी भाव का विभाव,अनुभाव एवं संचारी भाव के साथ संयोग होता है, तो श्रंगार रस की उत्पत्ति होती है।

अथवा

श्रृंगार रस को **"**रसों का राजा यानी कि रसराज **"** कहा जाता है । यह रसों में सर्वप्रथम स्थान रखता है । अर्थात जहां पर काव्य में मिलनसारिता या वियोग ,विरह का भाव प्रदर्शित होता है वहां पर श्रृंगार रस होता है।

श्रृंगार रस के दो भेद हैं **-**

- संयोग श्रृंगार रस और
- वियोग श्रृंगार रस ।

i) संयोग श्रृंगार रस**-** जहाँ पर नायक और नायिका के मिलन या संयोग का वर्णन हो, वहां पर संयोग श्रृंगार रस होता है ।

उदाहरण**- 1.** राम को रूप निहारति जानकी
कंगन के नग की परछाई ।
या ते सब सुध भूल गई,
पल टेक रही पर टारत नाहिं।

2. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय
सौंह करें भौंहिनीं हंसे , देन करि नट जाए

3. कहत , नटत , रीझत , खीझत , मिलत , खिलत , लजियात।
भरै भौन में करत है , नैनन ही सों बाता।

ii) वियोग श्रंगार रस**-** जहां पर नायक और नायिका के वियोग या विरह का वर्णन हो, वहां पर वियोग श्रृंगार रस होता है।

उदाहरण**- 1.** हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी,
तुम देखी सीता मृगनयनी।

2. निसिदिन बरसत नयन हमारे,
सदा रहति पावस ऋतु हम पै जब ते श्याम सिधारे।।